بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-14.07.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के वृत्तांत व घटनाओं का बयान।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 14 जौलाई 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

बदर के युद्ध के हवाले से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी तथा घटनाओं के विषय में वर्णन हो रहा था। बदर की लड़ाई समाप्त हुई तथा काफ़िरों को अल्लाह तआला ने उनके अंजाम तक पहुंचाया, सत्तर काफ़िर मारे गए जिनमें अनेक प्रतिष्ठित लोग तथा सरदार शामिल थे।

क़ुरैश के सरदारों को दफ़न करने के विषय में यह वर्णन मिलता है, सही बुख़ारी की रिवायत है कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ान-ए-कअबः में नमाज़ पढ़ रहे थे तथा सजदे की अवस्था में थे कि मक्का के काफ़िरों ने मरे हुए पशु का गर्भ (बच्चेदानी) लाकर आपके कन्धों के बीच रख दिया। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सजदे में ही रहे और काफ़िर हंसते रहे, यहाँ तक कि हज़रत फ़ातमा रज़ीयल्लाहु अन्हा वहाँ आ गईं तथा वह भारी बोझ आप स. के कन्धों पर से हटाया। उस अवसर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! तू क़ुरैश की पकड़ कर। फिर आप स. ने उमरू बिन हिश्शाम, उतबा बिन रबीअः, शोबा बिन रबीअः, वलीद बिन उतबा, उमय्या बिन ख़लफ़ तथा कुछ अन्य काफ़िरों के नाम लेकर दुआ की, कि ऐ अल्लाह! इनको पकड़। रावी हज़रत अब्दुल्लाह कहते हैं कि अल्लाह की क़सम, मैंने बदर के युद्ध वाले दिन स्वयं इन

सबको गिरे हुए देखा, फिर इन्हें घसीट कर गढ़े मे फेंका गया। उस अवसर पर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि गढ़े वाले धिक्कार के नीचे हैं।

हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ी. से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बदर की लड़ाई वाले दिन काफ़िरों के चौबीस आदमियों के बारे में आदेश दिया और उन्हें बदर के कुएँ में डाल दिया गया। बदर से वापसी पर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस कुएँ के किनारे पर खड़े हुए और इन काफ़िरों को उनके बापों के नाम से पुकारने लगे और फ़रमाया- काश तुमने अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञा पालन किया होता। हमने तो वह सब पा लिया जो अल्लाह ने अपने रसूल से वादा किया था।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ीयल्लाहु अन्हु इस घटना का वर्णन करके फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन शब्दों से कि ऐ गढ़े वालो! तुमने मुझसे युद्ध किया तथा दूसरों ने मेरी सहायता की है। यही लगता है कि आप अपनी जगह यह विश्वास रखते थे कि ये युद्ध काफ़िरों की ओर से शुरु हुए और आप स. ने विवश होकर केवल अपनी रक्षा के लिए तलवार उठाई।

सीरत की पुस्तकों में बदर की लड़ाई के वर्णन में हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ चमत्कारों का वर्णन भी मिलता है। अतएव उकाशा बिन मोहसन रज़ी. के बारे में लिखा है कि बदर के दिन वे अपनी तलवार से लड़ाई करते रहे यहाँ तक कि वह उनके हाथ में टूट गई, इस पर वे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें एक लकड़ी प्रदान की और फ़रमाया कि तुम इससे काफ़िरों के साथ युद्ध करो। उकाशा रज़ी. ने उस लकड़ी को लहराया तो वह उनके हाथ में तलवार बन गई।

मक्का मं काफ़िरों की हार की सूचना किस प्रकार पहुंची, इसका वर्णन इस तरह मिलता है कि मुशरिकों ने घबराहट की स्थिति में भागते हुए मक्के का रुख़ किया। लाज एवं शर्म के कारण उन्हें समझ न आता था कि किस प्रकार मक्का में दाख़िल हों। जब काफ़िरों ने मक्का वालों को क़ुरैश के सरदारों के मारे जाने की सूचना दी तो उन्हें विश्वास न होता था। क़ुरैश ने मारे हुए लोगों का मातम करने तथा शोक में रोने धोने से रोक दिया था।

दूसरी ओर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने वालों को विजय की सूचना देने के लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ी. को मदीना के ऊपरी भाग जबकि ज़ैद बिन हारसा रज़ी. को निचले भाग की ओर भिजवाया।

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. कहते हैं कि हमें विजय की शुभ सूचना तब मिली जब हमने हज़रत रुक़य्या सुपुत्री रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एवं पतनी उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ीयल्लाहु अन्हु की क़बर की मिट्टी बराबर कर दी थी

जब ज़ैद बिन हारसा रज़ी.आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनी पर सवार हाकर मदीने में दाख़िल हुए तो पाखंडियों तथा यहूदियों ने यह कहना शुरु कर दिया था कि मुसलमानों को युद्ध में हार हो गई है और नऊज़ु बिल्लाह आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी युद्ध में मारे गए हैं। इसी कारण से ज़ैद, आप स. की ऊँटनी पर सवार होकर आ रहे हैं। जब ज़ैद बिन हारसा रज़ी. ने विजय की सूचना सुनाई और क़ुरैश के सरदारों के नाम ले लेकर बताया कि क़ुरैश के अमुक अमुक सरदार मारे गए हैं तो मुनाफ़िक़ कहने लगे कि ऐसा कैसे हो सकता है, लगता है युद्ध में हारने तथा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या के कारण ज़ैद का दिमाग़ उलट गया है।

इस युद्ध में मुसलमानों को विजय मिलने के कारण 150 ऊँट और दस घोड़े मिले। इसके अतिरिक्त हर प्रकार का सामान, कपड़े, असंख्य खालें, रंगा हुआ चमड़ा तथा ऊन इत्यादि भी युद्ध जीतने के बदले में मिले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना भाग भी अन्य सहाबियों के बराबर रखा। सहाबा किराम रज़ी. ने एक तलवार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए रख ली। इसी तरह एक ऊँट जो अबू जहल के अधिकार में था, आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिला था। सीरत की किताबों में तलवार एवं ऊँट को बड़ा महत्त्व दिया गया है। इस तलवार का नाम ज़ुलफ़क़्क़ार था, बाद में अन्य युद्धों में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस तलवार को अपने पास रखते। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद यह तलवार अब्बासी ख़लीफ़ः के पास रही, इसी प्रकार वह ऊँट हुदैबियः की सन्धि तक आप स. के पास रहा और हुदैबियः की सन्धि के अवसर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस ऊँट को क़ुर्बानी के रूप में अपने साथ लेकर गए।

माले ग़नीमत (युद्ध में विजय के बाद प्राप्त होने वाली धन सम्पत्ति) को बांटने में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शहीदों के वारिसों को उनका भाग दिया। इसी तरह मदीने में मौजूद नायब तथा अन्य सहाबी जो विभिन्न दायित्वों को पूरा करने के कारण युद्ध में शामिल न हो सके थे, उन्हें भी सम्पत्ति में से उनका अंश दिया।

बदर के युद्ध में हाथ आए बन्दियों को फ़िदया (बदले में धन इत्यादि) लेकर स्वतंत्र कर दिया गया। फ़िदये की धन राशि एक हज़ार से चार हज़ार दर्हम तक थी, जो फ़िदया न दे सकता था उसके लिए शर्त थी कि बच्चों को लिखना पढ़ना सिखादे तो उसे रिहा कर दिया जाएगा। इसी तरह कुछ बन्दियों को कम फ़िदये अथवा बिना फ़िदये के भी छोड़ दिया गया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इस बारे में लिखा है कि-

मदीने में पहुंच कर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बन्दियों के बारे में सुझाव मांगा कि इनके विषय में क्या करना चाहिए। अरब देश में सामान्यतः बन्दियों की हत्या करने अथवा स्थाई सेवक बना लेने की प्रथा थी किन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह बात अति कष्टदायक लगती थी और फिर अभी तक इसके बारे में कोई अल्लाह का आदेश भी नाज़िल नहीं हुआ था। हज़रत अबू

बकर रज़ी. ने निवेदन किया कि मेरे विचार से इनको फ़िदया लेकर छोड़ देना चाहिए क्यूँकि अंततः ये लोग अपने ही भाई-बन्द हैं और हो सकता है कि कल को इन्हीं में से इस्लाम के फ़िदाई पैदा हो जाएँ परन्तु हज़रत उमर रज़ी. ने इस सुझाव का विरोध किया और कहा कि दीन के मामले में रिश्तेदारी को बीच में नहीं लाना चाहिए और ये लोग अपने कर्मों के कारण वध के अधिकारी हो चुके हैं। अतः मेरा सुझाव है कि इन सबकी हत्या कर देनी चाहिए बल्कि आदेश दिया जावे कि मुसलमान स्वयं अपने हाथ से अपने अपने रिश्तेदारों की हत्या करें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने प्राकृतिक दया भाव से प्रभावित होकर हज़रत अबू बकर रज़ी. के सुझाव को पसन्द फ़रमाया तथा वध के विरुद्ध निर्णय लिया तथा आदेश दिया कि जो मुशरिक अपना फ़िदया इत्यादि अदा कर दें, उन्हें छोड़ दिया जावे। अतएव बाद में इसी के अनुसार अल्लाह का आदेश नाज़िल हुआ। अतः हर एक व्यक्ति के सामर्थ्य के अनुसार एक हज़ार दर्हम से लेकर चार हज़ार दर्हम तक इसका फ़िदया निश्चित कर दिया गया और इस प्रकार बन्दी रिहा होते गए।

बदर के युद्ध के सम्बंध में आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित मृतकों का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

1- राणा अब्दुल हमीद ख़ान साहब, ठगढ़ी मुरब्बी सिलसिला व नायब नाज़िम माल वक़्फ़े जदीद पाकिस्तान।

2- मुकर्रमा नुसरत जहाँ अहमद साहिबा, पतनी मुकर्रम मुबश्शिर अहमद साहब मुरब्बी सिलसिला।

हुज़ूरे अनवर ने दोनों मृतकों की मग़फ़िरत और दर्जों की बुलन्दी के दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131